بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 08.07.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों के अंतर्गत आपकी ओर से भेजी जाने वाले महान सैन्य अभियानों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 8 जौलाई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में मुर्तद बाग़ियों के विरुद्ध सैन्य अभियानों के वर्णन की श्रंखला में गयारवें अभियान के विषय में फ़रमाया-

आप रज़ी. ने एक झंडा हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन अबू उमय्या रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को देते हुए आदेश दिया कि वे असवद अंसी की सना का मुक़ाबला तथा अबना की सहायता करें जिनसे क़ैस बिन मकशूह तथा जिनके साथ यमन के अन्य लोग लड़ाई में उलझे हुए थे, और हिदायत दी कि यहाँ से निपट कर कन्दा नामक क़बीले के लिए हिज़्रे मौत नामक स्थान तक जाना। हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन उमय्या रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हा के भाई थे। तबूक के युद्ध में पीछे रह जाने की अप्रसन्नता दूर होने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें कन्दा क़बीले का पदाधिकारी नियुक्त फ़रमा दिया किन्तु वे बीमार हो गए तथा वहाँ न जा सके तो उन्होंने ज़ियाद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि वे उनके लिए उनका काम भी पूरा करें, बाद में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें नजरान से लेकर यमन की अन्तिम सीमा तक शासक नियुक्त किया तथा युद्ध का आदेश दिया।

बुख़ारी की रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सपने में पहले ही बता दिया गया था कि दो झूठे नबुव्वत के दावेदार (सनआ वाला असवद अंसी, यमामा वाला मुसैलमा कज़्ज़ाब) प्रकट होंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईरान के बादशाह किसरा को इस्लाम में निमंत्रण का पत्र लिखा तो उसने अति क्रोधित होकर अपने आधीन यमन के कार्य-कर्ता बाज़ान को आदेश दिया कि वे उस व्यक्ति (रसूलुल्लाह स.) का सिर लेकर दरबार में पहुंचे। उसने दो आदमी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ रवाना किए परन्तु आप स. ने फ़रमाया- मेरे अल्लाह ने मुझे बताया है कि तुम्हारे बादशाह को उसके बेटे शेरोवियः ने मार डाला है तथा उसके स्थान पर स्वयं बादशाह बन बैठा है तथा साथ ही बाज़ान को दावते इस्लाम दी और फ़रमाया- यदि वह इस्लाम क़बूल कर लेगा तो उसे पहले की भांति यमन का निगरान रखा जाएगा। यह सुन कर दोनों व्यक्ति वापस चले गए, बाज़ान को पूरी बात बताई तथा उसी समय बाज़ान को यह सूचना भी मिल गई कि वास्तव में ऐसा हुआ है। बाज़ान ने जब इस बात को पूरा होते हुए देख लिया तो उसने इस्लाम की दावत क़बूल कर ली और आप स. ने उसे यमन का हाकिम बनाए रखा।

बाज़ान का जब देहान्त हो गया तो उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अमीरों को यमन के विभिन्न इलाक़ों पर निगरान नियुक्त फ़रमाया, यमन के उत्तरी भाग में रहने वाले धर्म गुरु असवद ने छल कपट तथा तुक बन्दी वाल वार्तालाप के कारण बड़ी जल्दी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया तथा नबुव्वत का दावा भी कर दिया जिस पर भोले भाले तथा मूर्ख लोगों की बड़ी संख्या उसके आस पास एकत्र हो गई। वास्तव में उसने यह नारा भी लगाया कि यमन केवल यमनियों का है, तो यमन के निवासी राष्ट्रवाद के इस नारे से बड़े प्रभावित हुए। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- यह नारा बड़ा पुराना है, आज भी यही लगाया जाता है और दुनिया में जो फ़साद फैला हुआ है, इसी कारण से है।

जब ये चिंता जनक सूचनाएँ मदीना पहुंचीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौता के युद्ध में शहीद होने वालों का बदला लेने तथा उत्तर की ओर से हमलों की रोक थाम के लिए हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की सेना को तय्यार करने में व्यस्त थे। आप स. ने यमन के सरदारों के नाम पैग़ाम भेजा कि वे अपने तौर पर असवद का मुक़ाबला जारी रखें और जैसे ही उसामा रज़ी. की सेना विजयी होकर लौटे तो उसे यमन की ओर रवाना कर दिया जाएगा।

इसी बीच हिज़्रे मौत तथा यमन के मुसलमानों की ओर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र पहुंचा जिसमें असवद अंसी के साथ युद्ध करने का आदेश दिया गया था अतः इस उद्देश्य के लिए हज़रत मुआज़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन जबल खड़े हुए और उससे मुसलमानों के दिल मज़बूत हो गए। जिशनिस (जुशीश) देलमी कहते हैं कि वबर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बिन युहन्नस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र लेकर हमार पास आए जिसमें आप स. ने आदेश दिया था कि हम अपने दीन पर क़ायम रहें तथा लड़ाई या किसी अन्य बहाने से असवद के विरुद्ध सैन्य काररवाई करें तथा आप स. के पैग़ाम को उन लोगों तक भी पहुंचाएँ जो इस समय इस्लाम पर अटल आस्था तथा दीन के समर्थन के लिए तय्यार हों। हमने इसके अनुसार किया किन्तु हमने देखा कि असवद के मुक़ाबले पर सफल होना बड़ा कठिन है।

जिशनिस देलमी बयान करते हैं कि हमें एक बात की जानकारी हुई कि असवद तथा अमरू बिन अदी करब के भान्जे क़ैस बिन अब्दे यग़ूस बिन मकशूह के बीच कुछ रंजिश हो चुकी थी अतः हमने सोचा कि क़ैस को अपनी जान का भय है। हमने उसे इस्लाम की दावत दी तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सन्देश पहुंचाया तो उसे ऐसा लगा कि मानो हम आसमान से उतरे हैं इस लिए उसने तुरन्त हमारी बात मान ली तथा हमने अन्य लोगों के साथ भी पत्राचार किया, विभिन्न क़बीलों के सरदार भी असवद के मुक़ाबले के लिए तय्यार हो चुके थे। इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजरान के समस्त वासियों को असवद की मामले के बारे में लिखा, उन्होंने आप स. की बात मान ली। जब यह ख़बर असवद तक पहुंची तो उसे अपना विनाश दिखाई देने लगा।

जिशनिस देलमी को एक युक्ति सूझी, वे असवद की पतनी आज़ाद के पास गए तथा असवद के हाथों उसके पहले पति हज़रत शहर रज़ी. बिन बाज़ान की शहादत, उसके वंश के अन्य लोगों के विनाश तथा कुटुम्ब को पहुंचने वाले अपमान एवं अत्याचार याद दिलाए तथा उसे असवद के विरुद्ध अपनी सहायता करने के लिए कहा तो वह बड़ी ख़ुशी से तय्यार हो गई। अन्ततः एक सुदृढ़ योजना तथा आज़ाद के समर्थन के साथ असवद अंसी को एक रात उसके महल में दाख़िल होकर मार दिया गया। इस तरह यह फ़ितना तीन महीने तक तथा एक कथन के अनुसार लगभग चार महीने तक भड़क कर ठंडा हो गया।

तत्पश्चात सनआ में पहले की भांति मुसलमानों का शासन स्थापित हो गया परन्तु यमन में एक बार फिर विद्रोह उठा, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त का चर्चा हुआ तो

सुधरते हालात फिर ख़राब हो गए। बहादुर, योग्य तथा राष्ट्रीय पक्षपात से परिपूर्ण क़ैस बिन अब्दे यग़ूस अब फिर इस्लाम के आधीन रहने से विमुख हो गया। यमन में फ़ारसियों का शासन उसे सदैव खटकता रहता था, उसके नष्ट होने के बाद वह अबना की समृद्धि, उनकी सामूहिक एवं आर्थिक प्रगति को धूल में मिलाना चाहता था। एक सफल सेनापति वह पहले ही था, उसने असवद की सेना के लीडरों से बात करके साथ मिलकर षड्यन्त्र किया तथा अबना को देश से निकालने की योजना बना ली। फ़िरोज़ तथा दाज़ूयह दोनों से उसने सम्बंध ख़राब कर लिए, दाज़ूयह को धोखे से मार डाला जबकि फ़िरोज़ बाल बाल बच गया। फ़िरोज़ ने हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को अपनी तथा अबना की वफ़ादारी से अवगत करके निवेदन किया कि हमारी सहायता कीजिए, हम इस्लाम के लिए हर एक क़ुर्बानी करने को तय्यार हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के द्वारा बनाए गए गयारह सैन्य दलों में से सबसे अंत में आप रज़ी. की सेना मदीना मुनव्वरह से यमन के लिए रवाना हुई, रास्ते में विभिन्न क़बीलों के लोग आप रज़ी. की सेना में शामिल हुए और यह काफ़ी बड़ी सेना आगे बढ़ती चली गई।

द्वित्तीय ख़ुत्बः से पहले हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने अमरू बिन मअदी करब और क़ैस बिन मकशूह की गिरफ़तारी, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. की सेवा में पेश किए जाने, उनसे होने वाली पूछ ताछ, क्षमा तथा स्वतंत्रता तथा उनके क़बीलों के हवाले किए जाने तथा भविष्य में उनकी रिहाई के परिणाम स्वरूप घटित होने वाले प्रभाव का वर्णन फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131